रिकॉर्ड :– तुम्हीं मेरे मीत हो..... ओम् शांति। बच्चे महिमा कर रहे हैं पतित–पावन की। बाप आए खास भारत को पावन बनाते हैं। भारत में ही पतित–पावन गाया जाता है। अब परमपिता प० पावन बनने का वर्सा देते हैं, जिसको राम कहते हैं। राम और रावण। अब आसुरी सम्प्रदाय इन बातों को तो समझती नहीं, जब तक ईश्वरी(य) सम्प्रदाय बने। तुम अब ईश्वरी(य) सम्प्रदाय, राम की सम्प्रदाय बनी हो। भारत ही डीटी वर्ल्ड, भारत ही डेविल वर्ल्ड बनते हैं। इस समय सभी मनुष्य अपन को आसुरी बुद्धि नहीं समझते; क्योंकि समझते हैं, अंदर ईश्वर बैठा है, ईश्वर तो सभी में है तो वो ईश्वरी(य) मत देते होंगे; परन्तु बाप समझाते हैं कि अब सभी के अंदर 5 असुर प्रवेश हैं; इसलिए सभी की आसुरी बुद्धि है। राम को तो जानते नहीं। जब राम को अथवा शिव को जानते हैं तो उनसे वर्सा मिलता है। फिर भी देखो, आसुरी सम्प्रदाय में घमंड कितना है! बिल्कुल कंगाल, रोगी, पतित, कौड़ी तुल्य बन गए हैं; तो भी ये नहीं समझते कि हमको रावण का श्राप मिला है। रावण को जलाते आते हैं, कहते– ये तो परम्परा से अर्थात् आदि से चला आता है; क्योंकि आदि सनातन हिन्दू धर्म कर दिया है। इन बिचारों को यह पता नहीं कि आधा कल्प राम राज्य, आधा कल्प रावण राज्य होता है। राम राज्य में भक्ति होती नहीं; रावण राज्य में भक्ति होती है। भक्ति भी देखो, कितनी कड़ी है! तुम देखेंगे, मनुष्य शिव को और देवताओं को जाकर पूजते हैं। अब देवताओं के चित्र तो घर में भी रखते हैं। फिर भी याद आती है कि जाकर मंदिर में ल०ना० का दीदार करे। तो याद आने से वो जड़ चित्र तो सामने आ जाता है, जैसे कि अपरोक्ष साक्षात्कार हो गया; फिर भी जाकर देखते हैं। क्यों जाते हैं मंदिर में? क्योंकि घर में गंद करते हैं; इसलिए देवताओं को किनारे रखते हैं। तो देवता को याद करने से उनका चित्र तो बुद्धि में आ जाता है, फिर भी जाकर वो ही देखते हैं। तो फायदा तो कुछ नहीं हुआ। तो भक्तिमार्ग में कितने धक्के हैं। अब तुमको इन धक्कों से छुड़ाए लिया है। वैसे शिव को याद करते हैं। जानते हैं, वो निराकार है। मंदिर में भी वो ही चित्र लिंग का रखा है। फिर भी जाते हैं दर्शन करने। यहाँ कोई आता है, तो उनसे पूछो कि शिव को जानते हो? मंदिर में जाते हो, चीज़ तो वो ही है; वो जड़ है, ये चेतन है। जैसे कृष्ण का जड़ चित्र है, तो ज़रूर चेतन में आया होगा ना! तो चेतन शिव भी ज़रूर आया होगा। अब वो निराकार है तो ज़रूर कोई के शरीर में आवेगा। सिर्फ आत्मा तो शरीर बिगर कुछ कर न सके। अब शिव क्यों आया था, कैसे आया था– यह कोई को पता नहीं। तुम बच्चे जानते हो, वो ही पतित–पावन है। अगर कृष्ण कहें, तो फिर उनको उसी नाम–रूप में चेतन में आना पड़े; परन्तु ऊँच ते ऊँच, पतित–पावन है ही शिव। उनका चित्र सभी के बुद्धि में आता है, फिर भी उनका दर्शन करने मंदिर में जाते हैं। फायदा तो कुछ नहीं। मनुष्य घर बैठ उनका ध्यान तो कर सकते हैं। बुद्धि में भी वही जड़ चित्र है। तो बिचारे कितनी अंधश्रद्धा में फँसे हुए हैं। फिर भी कितने बड़े–2 गुरु बनाते हैं। देहली में एक आया था, जिसने मानव मत संस्था खोली थी। अब मानव मत कौन–सी है? मानव की इस समय है ही आसुरी मत। रावण राज्य है। आसुरी मत कौन–सा राज स्थापन करेगी? आसुरी राज्य ही करेगी; परन्तु कुछ भी समझते नहीं। वो फिर समझता था, बहुत गुरु निकले हैं जहाँ बहुत पाखण्ड है, सो आया था जाँच करने कि ये भी कोई पाखण्ड तो नहीं है। वो तो समझते, हमारा बहुत अच्छा मत है। भल (उ)न्हों को समझाया भी जाता है; परन्तु मुश्किल समझते हैं। अपना घमंड

बहुत रहता है। जब ईश्वरी(य) मत मिले तब समझे। तुम जानते हो हम ईश्वर की मत पर चल रहे हैं। बाकी सब आसुरी मत पर चल रहे हैं अथवा रावण की मत पर चल रहे हैं। तुम जानते हो, सतयुग में तो रावण होता नहीं। वो लोग तो समझते ये विकार भी परम्परा से चले आते हैं। ये वेद–शास्त्र भी परम्परा सतयुग से चले आते हैं। वास्तव में भारत का मु(ख्य) शास्त्र है गीता; परन्तु सतयुग में तो कोई शास्त्र होता नहीं। ये सब हैं भक्तिमार्ग के शास्त्र। अब बाप आए हैं भक्ति की अंत में। भगत शिव की भक्ति करते हैं। बाप खुद आकर देखते हैं कि मेरी भक्ति कैसे करते हैं। बाप तो आते हैं ज्ञान से सद्गति करने, ल०ना० का राज्य स्थापन करने। इसलिए शिवबाबा आते हैं भक्ति की अंत में। अंत में भक्ति की सारी सामग्री हैं। आकर देखते हैं, मेरा जड़ चित्र भी है। सतयुग की स्थापना करने ज़रूर कलियुग की अंत में आना पड़े। तो भक्ति के सभी चित्र आकर देखते हैं। अब जड़ ल०ना० हैं, उनका चेतन में राज्य स्थापन करने आए हैं। तो तुम कितने भाग्यशाली हो। सब प्रैक्टिकल देखते हो। अब शिवबाबा आया है। कहते हैं, तुम जन्म–जन्मांतर मेरी, ल०ना० की पूजा करते आए हो, अब मैं आया हूँ चेतन ल०ना० का राज्य स्थापन करने। तुम ज्ञान चक्षु से देख रहे हो, बरोबर कल्प पहले भी आया था। अब फिर इसी शरीर में आया है। वही सारी भक्ति की सामग्री हाजिर है। शिव का मंदिर भी है और मैं चेतन भी हाजिर हूँ। आदिदेवी, आदिदेव के जड़ चित्र भी हैं और चेतन वही ब्रह्मा–सरस्वती भी हैं। अधर कन्या, कुँवारी कन्या भी तुम यहाँ बैठी हो। तुमको राजयोग सिखाए रहे हैं। वो राजयोग के मंदिर खड़े हैं और जो ल०ना० का राज्य स्थापन कर रहा हूँ उनके जड़ मंदिर भी खड़े हैं। ल०ना० अब फिर से अपना राज्य–भाग्य ले रहे हैं। एम–ऑब्जेक्ट तो क्लीयर है। जड़ चित्र सामने खड़े हैं। इन चित्रों में सभी का ऑक्युपेशन क्लीयर है। तुम जानते हो, हम सो देवी–देवता बन जाएँगे, चेतन में राज्य करेंगे। वहाँ तो जड़ चित्र न रहेंगे, सब अभी खलास हो जाएँगे। ये मंदिर, मस्जिद, गिरजाएँ सभी विनाश हो जाएँगी। जब क्राइस्ट आएगा तो ये चर्चिज़ थोड़े ही होंगी। जब फॉलोअर्स बहुत होंगे तब पैसे इकट्ठे कर बनावेंगे। ये तो बहुत बाद में बनते हैं। अब तुम बच्चे जानते हो, माया रावण ने हमें श्राप दिया था तो आसुरी सम्प्रदाय बन गए थे। ये भी सब आसुरी सम्प्रदाय कितनी कंगाल बन गई है। विख माँग रहे हैं। ये है रावण का श्राप। तुमको अब मिलता है राम (प०) का वर्सा। गाँधी भी कहते थे, हम पतित हैं– हे राम! आकर राम राज्य का वर्सा दिओ। उसने तो नॉन वाइलेंस सिखाई। ये अब लड़ाई में फँस गए हैं। जो लड़ाई ..... (इ)कट्ठे रहते थे। ब्रिटिश गवर्मेन्ट ताकत वाली थी तो कोई नाम नहीं लेता था। अब राज्य मिला है निर्बलों को, तो सभी ठुगे मारते रहते हैं। एक तरफ चीन, दूसरे तरफ पाकिस्तान; इसलिए अब लड़ाई का सामान (इ)कट्ठा करने लिए पैसे माँग रहे हैं। गाँधी थोड़े ही वाइलेंस लिए पैसा माँगता था। वो तो भूख हड़ताल, पिकेटिंग आदि से राज्य लिया। अब कितना दुखी है। तमोप्रधान है, तो दुख बढ़ता जाता है। अभी तो रक्त की नदियाँ बहेंगी, बहुत कुछ होगा। आसुरी मत उल्टे रास्ते पर ही जाएगी। जो श्रीमत लेंगे वो श्रेष्ठ बनेंगे, सब तो नहीं लेंगे। सबका तो विनाश होना है। शांति होती है सतयुग में। वह वर्सा हमको मिल रहा है। अभी तो माया रावण का श्राप है। राम पीस स्थापन करता, रावण पीसलेसनेस बनाती है। तो सुख–शांति का वर्सा राम प० से मिल सकता है। बस, बात ही दो हैं। आधा कल्प रावण राज्य, आधा कल्प राम। तो अब पावन बनने का वर्सा लेना चाहिए ना! पावन बनाने वाला एक। उनका नाम राम कहने से तो त्रेता में चले जाते हैं; इसलिए शिव कहें। तो वो सदा सुख देने वाला सदाशिव को तो सभी जानते हैं। अच्छा, बच्चों को गुडमॉर्निंग। ॐ